ORIGINAL RESEARCH PAPER

Defence Strategic

हिमालयी क्षेत्र में चीन की विस्तारवादी नीति एवं भारत–भूटान की सुरक्षा चिन्ता

KEY WORDS: सामरिक महत्त्व, डोकलाम, आर्थिक हित, वैषिक सुरक्षा, भारत, भुटान, चीन, द्विपक्षीय वार्ता, पुनारवा संधि

अमित कुमार हुड्डा शोधार्थी, रक्षा एवं स्त्रातेजिक विभाग, महर्षि दयानन्द विष्वविद्यालय, रोहतक

ABSTRACT

भारत की सुरक्षा की दृष्टी से भूटान का भू–सामरिक महत्व है। डोकलाम की घटना चीन द्वारा सामान्य संघर्ष की घटना नहीं थी। बल्कि चीन इस सामरिक महत्व के क्षेत्र में सड़क बनाकर अपना कब्जा करने का प्रयास कर रहा था। जिससे भारत और भूटान दोनों की सुरक्षा को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया था। हिन्द महासागर में भी चीन, भारत के अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह से मात्र 40 किलोमीटर दूरी पर अपना अड्डा बनाए हुआ है। श्रीलंका के हामनटोटा एवं पाकिस्तान ग्वादर बन्दरगाह को अपने अड्डो के रूप में विकसित कर रहा है। इस तरह से चीन सामरिक दृष्टी से भारत की घेराबन्दी कर चुका है। जिसका सीधा प्रभाव भारत की सामुद्रीक सुरक्षा एवं भारत एवं भूटान के विदेषी व्यापार पर पड़ेगा। डोकलाम की घटना के दौरान चीन द्वारा भारत के विरूद्ध जिस प्रकार का रूख अपनाया है, इससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में चीन भारत की उत्तरी सीमाओं पर अपनी हस्तक्षेप के द्वारा भारत पर सामरिक दबाव बनाता रहेगा।

परिचय :–

भूटान दक्षिण एषिया का एक स्थलबद्ध छोटा राज्य है। यह भारत की उत्तर–पूर्वी सीमा पर स्थित है। उत्तर की ओर से यह तिब्बत के पठार से घिरा हुआ है। पष्चिम में भारत के सिक्किम राज्य व चुम्बी घाटी से घिरा है। भूटान का कुल क्षेत्रफल 38394 वर्गमील है। 2010 के आकड़ों के अनुसार इसकी जनसंख्या 0.70 मिलियन है। भारत के हिमालयी क्षेत्रों में कष्मीर, हिमाचल, उत्तराखण्ड तथा समूचा पूर्वोत्तर (असम, अरूणाचल, सिक्किम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड) एवं पष्चिमी बंगाल का दार्जिलिंग क्षेत्र आता है। जिसमें अनेकों दर्रे हैं। भारत के अरूणाचल प्रदेष के साथ–साथ भूटान तथा तिब्बत की प्राकृतिक सीमाओं को चीन स्वीकार नहीं करता है। भारत की नीति भूटान को एक स्वतंत्र देष बनाए रखने की है। भारत के प्रयासों से भूटान ने 1971 में संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता ग्रहण की थी। 1973 में भूटान गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का सदस्य भी बन गया। भूटान के साथ भारत ने स्वतंत्र कूटनीतिक संबन्धों की स्थापना 1968 में की थी। इसके पहले सिक्किम स्थित भारत के राजनीकि अधिकारी द्वारा भूटान में भारत का प्रतिनिधित्व किया जाता था।[1] 1977 में भारत ने दिल्ली स्थित भूटान के दूतावास का स्तर भी ऊँचा कर दिया है। 2008 में भूटान में शांतिपूर्ण तरीके से प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की गई तथा वर्तमान में भूटान एक अल्पविकसित देष होते हुए भी विकास के पथ पर अग्रसर है। ब्रिटिष शासन के दौरान भूटान ओर भारत की ब्रिटिष सरकार के बीच 1865 में एक संधि हुई थी, जिसे सिनचुला संधि के नाम से जाना जाता है। इस संधि के अंतर्गत भूटान को भारत की अन्य देसी रियासतों की तरह एक रियासत का दर्जा प्रदान किया गया था। 1910 में एक अन्य संधि द्वारा यह व्यवस्था की गयी थी कि भारत सरकार की सलाह को स्वीकार करेगी। वस्तुतः 1949 में स्वतंत्र भारत और भूटान के बीच जो नई संधि हस्ताक्षरित की गई उसका मूल तत्व 1910 की संधि में था। भारत की मुख्य चिन्ता चीन के घुसपैठ को लेकर है। भूटान–चीन सीमा निर्धारण हेतु भूटान द्वारा भारत की परवाह किए बिना चीन से द्विपक्षीय वार्ताओं तथा चीन द्वारा भूटान की सीमाओं का अतिक्रमण एवं हस्तक्षेप आदि ऐसे गंभीर पष्न है। जो भारतीय सुरक्षा को प्रभावित कर रहे हैं।[2]

सिक्किम में मौजूद गतिरोध का भारत और चीन के बीच सामान्य सीमा विवाद से बहुत महत्त्व है और अब यह दिखाता है कि पहले हुए समझौतों के मुकाबले चीन अब कठोरता अपना रहा है। पष्चिम में चीन का भारत के अक्साईचीन के 38000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर कब्जा है ओर पूर्व में चीन अरूणाचल प्रदेष पर अपना दावा करता है जो करीब 90,000 वर्ग किलोमीटर होता है। चीन अपने अधिकारियों और विषेशज्ञों के माध्यम से लगातार यह संदेष भेजता है कि वह तवांग पर समझौता नहीं कर सकता।[3]

भूटान की भू–सामरिक स्थिति

भारत के साथ भूटान की कुल 800 मील की सीमा लगती है। परन्तु चीन के साथ उसकी सीमा तिब्बत के साथ लगभग 470 किलोमीटर लगती है। चीनी लोग भूटान की सीमा का अतिक्रमण करते रहते हैं। प्रारम्भ में भारत ने इच्छा व्यक्त की थी कि भूटान–चीन सीमावार्ता में भूटान की ओर से भारत भाग लेगा। लेकिन चीन को यह मंजूर नहीं था। हालांकि भारत के सामरिक हित बीच में आते हैं। भारत की भूटान नीति का मूल आधार यही है कि भारत के सामरिक हित प्रभावित नहीं होने चाहिए। भूटान के संबंध में भारत की मुख्य चिंता चीन के हस्क्षेप व प्रभाव की है। दूसरी चिन्ता भूटान में रह रहे 4000 तिब्बती शरणार्थियों के भविश्य को लेकर है। ये शरणार्थी 1959 से वहां निवास कर रहे हैं। चीन के दबाव में आकर भूटान की राष्ट्रीय सभा ने 1979 में यह प्रस्ताव पारित किया था कि ये शारणार्थी भूटान की नागरिकता ग्रहण कर ले अन्यथा उन्हें तिब्बत वापस भेज दिया जाए। भारत इन दोनों ही विकल्पों का समर्थक नहीं है। क्योंकि यदि इन शरणार्थियों को भूटान की नागरिकता मिल जाती है, तो तिब्बत की स्वायत्ता का दावा स्थिर पड़ जाएगा और यदि उन्हें जबरन तिब्बत भेज दिया जाता है तो वहां उनके राजनीतिक अधिकारों का हनन होगा।[4]

अगस्त, 1949 में भूटान सरकार ने स्वतंत्र भारत की सरकार से एक नयी संधि की। जिसमें 'पुनारवा संधि' की अनेक धाराओं का उल्लेख किया गया। इसमें दोनों देषों ने शांति और मित्रता को सुनिष्चित करने का आष्वासन दिया। इस संधि के अनुसार भूटान और भारत का संबंध पूर्ववत् बनाये रखने का निष्चय किया गया। भारत ने भूटान के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया। संधि के अनुच्छेद 2 में कहा गया कि भूटान सरकार विदेषी मामलों में भारत सरकार के परामर्ष को मार्गदर्षक के नाते मानने के लिए सहमत है।[5] यह भी व्यवस्था की गयी कि भारत 5 लाख रूपये वार्षिक सहायता देगा। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू और प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के काल में भारत और भूटान के संबंध बहुत अच्छे रहे। भारत ने भूटान के आर्थिक विकास में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और उसे आर्थिक मदद दी। 30 करोड़ रूपये की लागत से भारतीय सीमा सड़क संगठन ने भूटान में 1000 किलोमीटर लम्बी सड़क का निर्माण किया। चीन ने भूटान के 480 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर अपना दावा करता है। भारत ने भूटान में स्कूल तथा हस्पताल का भी निर्माण कराया। सितम्बर 1971 में भूटान संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बन गया। 13–14 अगस्त 1976 को भूटान नरेष ने गुट निरपेक्ष राष्ट्रों के षिखर सम्मेलन में भारत की एक अच्छे पड़ोसी के रूप में तारीफ की।[6]

चीन पहले से ही भूटान को अपने प्रभाव तथा नियंत्रण में करने के लिए लगा रहा है। चीन ने 1958 में एक मानचित्र बनाकर भूटान की लगभग 300 वर्गमील भूमि पर अपने हक का दावा किया और 1966 में डोकलाम पर अतिक्रमण करके उसे सदा–सदा के लिए अपना दावा पेष किया। उसी समय से भारत ने भूटान की ओर गम्भीरता से ध्यान देना शुरू किया। भारत की आज यह सोच है कि जहाँ तक संभव हो सके भूटान से निर्यात बढ़ाया जाए और भुगतान–सन्तुलन ठीक किया जाए। वैसे तो भारत–भूटान के विकास में काफी योगदान देता है और भूटान को उसका लाभ भी मिलता है। 1994 में दोनों देषों के बीच जो संधि हुई थी। वही आज भी दोनों देषों के बीच मदद एवं सहयोग का बुनियादी आधार बनी हुई है।[7]

चीन का विस्तारवादी चरित्र एवं भारत

चीन के विस्तारवादी चरित्र के कारण ही भूटान के डोकलाम में भारत और चीन के बीच टकराव की समस्या पैदा हुई है। भारतीय सेना ने भूटान के डोकलाम में 16 जून 2017 को चीन के सड़क निर्माण के प्रयास को रोक दिया। उसी समय से दोनों सेनाओं के बीच तनाव का माहौल पैदा हो गया। हालांकि भारतीय सेना ने चीन के सड़क निर्माण को रोकने के लिए बल प्रयोग करने की बजाय मानव श्रृंख्ला बनाई फिर भी चीन के विषेशज्ञों ने इसे युद्ध की स्थिति बताया। सबसे उत्तेजक ब्यान भारत में स्थिति चीन के राजदूत का था। जिसने कहा कि अब गेंद भारत के पाले में है। चीन के एक विषेशज्ञ ने धमकी दी और सैन्य कारवाई की चेतावनी दी।[8] इससे चीन के चरित्र का पता चलता है, लेकिन भारत ने नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारतीय राजनीति का असर दूरी दुनिया पर पड़ा। मोदी का पहले यूरोप फिर अमेरिका और इजराइल दौरा होने के साथ भारत, जापान और अमेरिकी सेना के साथ सैन्य अभ्यास उसी श्रृंखला की कड़ियां हैं। यह कोषिष भारत की ताकत बढ़ाने और चीन को रोकने के लिए भी थी।

दलाई लामा ने अरूणाचल प्रदेष का दौरा किया, जिसे चीन अपना प्रदेष बताता है। विषेशज्ञों काष्मानना है कि युद्ध करना न तो चीन के हित में और न ही भारत के हित में है।

कूटनीति में अक्सर यह कम ही देखा गया है कि दो देषों के प्रतिनिधियों के बीच मुलाकातें भी लगातार हो रही हैं और तनाव का माहौल भी कायम है। लेकिन भारत और चीन के मामले में दोनों बातें सही हैं। बीते तीन साल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शीजिन पिंग के बीच कई मुलाकात हो चुकी हैं। लेकिन इन मुलाकातों से किसी भी विवादष्का हल नहीं हुआ। इतना ही नहीं चीन ने पाकिस्तान का साथ देकर भारत की कूटनीति को कमजोर करना अपनी आदत बना ली है। सीमा विवाद पर चीन का रवैया कभी भी उदार नहीं रहा। अरूणाचल प्रदेष के मामले में उसकी सोच न केवल गलत है। बल्कि भारत को हैरान करने वाली है।

चीन हमेषा मौके की फिराक में रहता है।[9] अरूणाचल प्रदेष को लगातार विवादित इलाका बताना, वन बेल्ट वन रोड़ को पी.ओ.के. से ले जाना और चुम्बी घाटी को लेकर विवाद उत्पन्न करना। यह दर्षाते हैं कि दुनिया को सपने दिखाने वाले चीन के लिए मानो भारत किसी किरकिरी से कम न हो। चीन दूसरे राष्ट्रों को नुकसान पहुंचाने वाली कोषिषें करता है।

वास्तव में चीन की भारत को घेरने की रणनीति का जवाब भारत चीन के पड़ोसी देषों से मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित कर दे रहा है और इसके लिए वह चीन के पड़ोसी देषों के साथ गठबंधन कर रहा है। भारत अपनी पूर्व की और देखो की नीति के अन्तर्गत म्यांमार, श्रीलंका, वियतनाम आदि से संबंध मजबूत कर रहा है। भारत जानता है और इसलिए भारत म्यांमार के जनरलों को लुभाने का प्रयास कर रहा है और इसी क्रम में भारतीय सेनाध्यक्ष बिपिन रावत ने 28 मई 2017 को म्यांमार का दौरा किया। वियतनाम ने भी 'ओ.एन.जी.सी.' विदेष को दिए गए लाईसेंस का नवीनीकरण किया है। जिसके अन्तर्गत वह दक्षिण चीन सागर तेल की खोज कर सकता है। जिसको लेकर चीन, वियतनाम और फिलीपिंस के बीच विवाद है और यह बताता है कि यह निर्णय व्यावसायिक की बजाय सामरिक महत्व को ध्यान में रखकर लिया गया है। क्योंकि इस क्षेत्र में निवेष पर प्रतिफल अधिक रहने की संभावना नहीं है। भारत–चीन के बीच दीर्घकालीन संबंधों का निर्धारण क्षेत्रीय और वैष्विक सुरक्षा वातावरण में काफी हद तक भारत के रणनीतिक लक्ष्यों पर निर्भर करेगा।[10]

चीन से भारत एवं भूटान की सुरक्षा को चुनौतिया

वैसे तो चीन दक्षिणी एषिया के दायरे में नहीं आता, लेकिन भारत–भूटान का पड़ौसी देष होने के नाते चीन की कूटनीतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से राष्ट्रीय सुरक्षा को काफी प्रभावित करता है। 1962 का चीन–भारत युद्ध दोनों देषों के बीच एक ऐसी समस्या बन गया। जिसने दोनों देषों के सम्बन्धों और पंचषील के सिद्धान्तों की बलि ले ली। चीन ने वन बेल्ट वन रोड परियोजना में अपनी सड़कों को जिस तरह नेपाल की सड़कों से जोड़ लिया है। उसने चीनी खतरे को भारत के दरवाजे पर ला खड़ा किया है। नेपाल में भारत पिछले पचास वर्ष से आर्थिक विकास पर धन खर्च करता आ रहा है। वहाँ चीन सरकार ने अपने पैसे के दम पर नेपाल की राजनीति, अफसरषाही मीडिया और बुद्धिजीवियों को भारत को खिलाफ जहर से लबालब भर दिया है। इतना ही नहीं वह भूटान पर भी अपनी विस्तारवादि नीति के तहत दबाव बनाता रहता है और लालच देता है ताकि भूटान भी भारत के खिलाफ खड़ा हो जाए। चीन वहाँ के राजनषाही परिवार और सरकारी अफसर उल्फा समेत कई भारत विरोधी आतंकवादी संगठनों को पनाह और प्रषिक्षण की सुविधायें उपलब्ध करा रहे हैं। म्यांमार में भी चीनी नौ सेना वहाँ के सैनिक शासकों की मदद से हिन्द महासागर में अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह में मात्र 40 कि.मी. की दूरी पर अड्डा बनाकर भारत के खिलाफ किलेबन्दी कर चुकी है।[11] वर्तमान में अमेरिका और

रूस के बाद चीन की नौ सेना विष्व में तीसरा स्थान रखती है। 20वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में चीन ने अपनी नौसेना का बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण एवं विस्तार का कार्यक्रम शुरू किया था। फलस्वरूप आज चीनी नौसेना आणविक क्षमता से युक्त है। सन् 1980 में पहली बार चीन की नौ सेना ने बिना किसी दूसरे देष की बंदरगाह की सुविधाऐं प्राप्त किये समुद्रों में 13000 नाविक मील दूरी, तय की तथा उसने विभिन्न प्रकार के नौ सैन्य अभ्यास किये। 1985–86 में चीनी युद्धपोतों ने हिन्द महासागर क्षेत्र की यात्रा की। ये युद्धपोत, पाकिस्तान के कराची, बांग्लादेष के चटगांव और श्रीलंका के कोलम्बो बन्दरगाह गये।

सन् 2006 में एषिया–प्रषान्त क्षेत्र में जापान को पीछे छोड़ते हुए चीन सैन्य सामग्री पर खर्च करने वाले सबसे बड़े राष्ट्र के रूप में उभरा है। इस समय चीन विष्व में अपनी रक्षा पर खर्च करने में चौथा सबसे बड़ा राष्ट्र है। चीन की नौसेना आकार और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से भारतीय नौसेना से बेहतर है। चीन हिन्द–महासागर में महत्वपूर्ण मिलन बिन्दुओं पर न केवल अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए नौ सैन्य अड्डों की स्थापना कर रहा है। चीन को मालूम है कि सामुद्रिक शक्ति से उसे वह सामरिक मदद् प्राप्त होगी। जिससे वह भारत सहित इस क्षेत्र में अपने दबदबे को बढ़ा सकता है।[12]

चीन सरकार अपने तिब्बती उपनिवेष पर कब्जा बनाये रखने के लिये जरूरी साजो सामान को भारत सरकार की मद्द से समुद्र के रास्ते बीजिंग से कोलकता और उसके बाद कोलकत्ता से सिक्किम को रास्ते तिब्बत तक ले जाने की सुविधा तो चाहता है। परन्तु वह सिक्किम को भारत का अंग मानने को तैयार नहीं है। चीन की घुसपैठ की हरकतें भारत–भूटान का विष्वास तोड़ रही है। कई बार अरूणाचर प्रदेष में एवं लद्दाख में किया हस्तक्षेप इसका प्रमाण है। 15 अप्रैल 2013 को चीनी सेना का लद्दाख के सामरिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण इलाके में 18 किलोमीटर भीतर तक घुसपैठ करना। भारत के राजनीतिक नेतृत्व के सामने संकट पैदा कर दिया था। चीन पुराने क्षेत्रीय दावे दोबारा उठाकर और कई मोर्चों पर रणनीतिक दबाव बनाकर भारत के सामने नई सुरक्षा चुनौतियां पैदा कर रहा है। फिर भी भारत को चीन के आक्रामक रूख को कम करने के लिए एक स्त्रातेजी बनाकर उसे अमल में लाना चाहिए।

1958 में भूटान व चीन के बीच यह सीमा विवाद अत्यन्त खतरे में उस समय पड़ गया था। जब चीन ने इस राज्य के पष्चिमी, उत्तरी व पूर्वी क्षेत्रों के भाग पर अपना दावा किया। जुलाई 1959 में चीन में तिब्बत के विलय की नीति का पालन करते हुए चीन ने पष्चिमी तिब्बत में उन क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया जिन पर भूटान का शासन था। ये क्षेत्र कैलाष पर्वत व गंगतोक क्षेत्र के समीप थे। 1960 से भूटान सीमा पर चीनी घुसपैठ हो चुकी है। हथियार बन्द चीन पषुपालकों ने नियमित रूप से भूटान के उन क्षेत्रों में प्रवेष किया। जहां सेना की चौकसी नहीं थी। ये पषुपालक स्थाई बस्तियां बनाते हैं और बाद में इन क्षेत्रों पर अपना दावा कर लेते हैं। चीनियों ने पहले निष्चित करके सामरिक ठिकानों पर कब्जा किया है। इन संघर्षों में सबसे महत्वपूर्ण 1967, 1979 व 1983 की घटना महत्पूर्ण थी। चीन के हस्तक्षेपों का उद्देष्य भूटान को प्रत्यक्षवार्ता की सहमति के दबाव डालना था।[13]

चीन ने 16 जून 2017 को भूटान को डोकलाम क्षेत्र में घुसकर सड़क बनाने की कोषिष की जिसे भारतीय सेना ने रोक दिया तो डोकलाम को लेकर दोनों देषों के बीच तनाव की स्थिति पैदा हुई। इस समस्या का हल भी नहीं हुआ था कि चीन ने उत्तराखंड के चमोली के बाराहोती में 26 जुलाई 2017 को घुसपैठ की और भारतीय सीमा क्षेत्र में एक किलोमीटर अन्दर घुस आई जब भारतीय सेना गष्ती दल वहाँ पहुंचा तो चीनी वापस लौट गये। 30 जून 2017 को भारत ने चीन से कहा था कि भूटान के डोकलाम इलाके में सड़क निर्माण उनकी कोषिष साल 2012 में हुए समझौते का उल्लंघन है और भारत की सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा।

निष्कर्श

भूटान का भू–सामरिक महत्त्व भारतीय सुरक्षा पर बड़ा प्रभाव डालता है। लेकिन चीन की रूचि इस में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। चीन भूटान को यह चेतावनी देता रहा है कि वह भारतीय सेनाओं का अपने सैनिक प्रषिक्षण एवं रक्षा–व्यवस्था के लिए प्रयोग न करे। चीन ने नेपाल के साथ सम्बन्ध अच्छे बना लिये है और अपनी वन बेल्ट वन रोड़ परियोजना में शामिल लिया। जिस प्रकार से दक्षिण एषिया में चीन की बढ़ती सक्रियता से भारत की सुरक्षा के सामने चुनौतियां और बढ़ गई है। पाकिस्तान को छोड़कर पारम्परिक रूप से दक्षिण एषिया के छोटे देष अब तक काफी हद तक भारत पर निर्भर रहते हैं। चीन पाकिस्तान के सामरिक हितों को भी रक्षा करना चाहता है। जिसमें सैन्य–षस्त्रों की सप्लाई करने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त चीन द्वारा पाकिस्तान को परमाणु तकनीक देने के साथ–साथ वह मध्यम गति से मार करने वाले तथा लम्बी दूरी तक मार करने वाले हथियार और टैकनोलोजी प्रदान करता है। जिसका भारत की सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। भारतीय सीमा क्षेत्र में चीन की हस्तक्षेप की घटनाएं बढ़ती जा रही है। जो भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है। चीन ने 16 जून 2017 को भूटान के डोकलाम क्षेत्र में 26 जुलाई 2017 को उत्तराखंड के चमोली के बाराहोती में घुसपैठ और हिन्द महासागर में भी भारत की सुरक्षा के लिए चुनौतियां हैं। हिन्द महासगर की तरफ से शरती की सुरक्षा को चीन से ही सर्वाधिक खतरा है। भारत–भूटान को इन सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी सैन्य ताकत को और बढ़ाने की आवष्यकता है। वहां पर सीमा सुरक्षा ओर बढ़नी चाहिए और अपने रक्षा खर्च में वृद्धि करके नये हथियारों का विस्तार तेजी से करना चाहिए। अपने पड़ोसी छोटे राष्ट्रों के साथ सहयोग बनाकर सम्बन्ध घनिष्ट बनाने चाहिए। क्योंकि चीन की डोकलाम घटना से यह बात उजागर होती है। कि वह अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है। अतः हमें अपनी और अपने पडोसी राष्ट्र भूटान की सुरक्षा के लिए हमेषा तैयार रहना चाहिए, क्योंकि चीन और पाकिस्तान दोनों देष मिलकर यहां पर कभी भी खतरा उत्पन्न कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. रूप नारायण झा, भारत–भूटान सम्बन्ध 1947–1997, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस प्रा.लि., जयपुर, 1998, पृ. 1
2. आर.एस. यादव, भारत की विदेष नीति, पियर्सन, नई दिल्ली, 2013, पृ. 230
3. इण्डिया टुडे, 19 जुलाई 2017, पृ. 29
4. डा. हरवीर शर्मा, भारत : सामरिक परिवेष 1994–95, हर्यम्बुज प्रकाषक, मेरठ, 1995, पृ. 30
5. मधुराजपूत, ईन्डो–भूटान रिलेषन थ्रू परिज्म ऑफ हिस्ट्री, मानक पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली, 2011, पृ. 119
6. डॉ. बी. सिंह गहलौत, भारतीय विदेष नीति, अर्जुन पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2004, पृ. 138, 139
7. डॉ. अषोक कुमार सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रकाष बुक डिपो, बरेली, 2014, पृ. 371
8. संपादकीय, दैनिक भास्कर, 6 जुलाई 2017, पृ. 4
9. सुषील कुमार सिंह, विवादों का रचयिता चीन, हरिभूमि, 7 जुलाई 2017, पृ. 8
10. पंजाब केसरी, 11 जुलाई 2017, पृ. 6
11. प्रो. हरवीर शर्मा, भारतीय की सुरक्षा समस्या 1998, हर्यम्बुज प्रकाषन मेरठ, 1998, पृ. 270
12. हर्शवर्धन पंत, भारतीय सुरक्षा और विदेष, पृ. 245
13. हरवीर शर्मा, इण्डियाज जियो–स्टेरेटकिस परसपैकटीव्ज, कृष्णा ग्रुप, मेरठ, 2015, पृ. 81